INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक

(Agriculture Supervisor)

(राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग)

HANDWRITTEN NOTES

भाग - 2
राजस्थान का इतिहास
+ कला एवं संस्कृति

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक

(Agriculture Supervisor)

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

भाग – 2

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक (Agriculture Supervisor)"*** *को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक (Agriculture Supervisor)" परीक्षा*** *में पूर्ण संभव मदद करेंगे ।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/gd17e6

Online order करें - https://bit.ly/agri-notes

मूल्य : (₹)

संस्करण : नवीनतम

	राजस्थान का इतिहास	
क्रसं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)	1
2.	ऐतिहासिक केंद्र	9
3.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां	16
4.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व प्रणाली	73
5.	स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम)	88
6.	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	96
7.	राजस्थान का एकीकरण	101
8.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	106
9.	प्रजामण्डल आंदोलन	115
	कला एवं संस्कृति	
1.	वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ	128
2.	चित्रकला	147
3.	हस्त कला / हस्तशिल्प	156

4.	राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ	164
5.	राजस्थान की भाषा व राजस्थान की बोलियाँ	171
6.	वेशभूषा एवं आभूषण	175
7.	मेले एवं त्यौहार	177
8.	राजस्थान के लोकसंगीत (लोकगीत)	188
9.	राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	196
10.	राजस्थानी संस्कृति परम्पराएं और विरासत प्रथाएं	210
11.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत सम्प्रदाय	215
12.	राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ	223
13.	महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल	232
14.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	235

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – 1

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

पाषाणकालीन सभ्यता

1. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण-Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे। ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्‌भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्‌भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्‌भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्‌भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत

से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)

- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

<u>कांस्ययुगीन सभ्यताएं</u> -

2. <u>कालीबंगा की सभ्यता -</u>

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है – **सरस्वती नदी** । इसे **द्रेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

<u>इस सभ्यता की खोज</u> -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरीथे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **<u>अमलानंद घोष</u>** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

<u>एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –</u>

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

<u>इस सभ्यता की विशेषताएँ –</u>

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **<u>समकोण</u>** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को '**जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति**' के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था।
  (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी /

देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था । यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे ।
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना ।
- एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना ।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।
- यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग **शल्य चिकित्सा** से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं ।
- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक और स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।
- इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

कालीबंगावासियों का सामाजिक जीवन

- उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।
- कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। इसके साथ ही खिलौने, पासे, मत्स्य काँटे आदि के अवशेषों से अनुमान है कि इनके जीवन में मनोरंजन का पर्याप्त महत्व था। संभवतः ये **शाकाहारी एवं मांसाहारी** दोनों होते थे। खाद्य सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौं, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था।

मृतक संस्कार :

कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं ।

- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।
- दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।
- तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।
- उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मदभाण्ड आदि रखे जाते थे।
- यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली है, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से बाँये** लिखी प्रतीत होती है साथ ही अक्षर एक-दूसरे के ऊपर खुदे हुए प्रतीत होते हैं।

आर्थिक जीवन :

- कालीबंगा के भग्नावशेषों से अनुमान लगाया जा सकता है कि अधिकांश लोगों का जीवन सामान्य रूप से समृद्ध था। सुख एवं समृद्धि के लिए लोगों ने विभिन्न साधनों का उपयोग किया था।
- कालीबंगा के निवासी कौन-कौन से पशु पालते थे, इसका ज्ञान हमें पशुओं के अस्थि अवशेषों, मृद पात्रों पर किये गये चित्रांकनों, मुद्रांकनों तथा खिलौनों से होता है। ये भेड़-बकरी, गाय, भैंस, बैल, भैंसा तथा सुअर आदि पशुओं को पालते थे। कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था ।
- **सरस्वती दृषद्वती नदियों** द्वारा लाई जाने वाली मिट्टी कृषि जन्य उत्पादों के लिए बहुत उपजाऊ थी। इसमें वे जौं और गेहूँ की खेती करते थे। हल लकड़ी के रहे होंगे। सिंचाई के लिए नदी जल एवं वर्षा पर निर्भर थे। कालीबंगा के कृषक निश्चय ही 'अतिरिक्त उत्पादन' करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरों को समृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार एवं वाणिज्य था। यह जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। **लोथल (गुजरात)** इस सभ्यता में तत्कालीन युग का एक महत्त्वपूर्ण **सामुद्रिक व्यापारिक** केन्द्र था।
- कालीबंगा से मुख्यतः हड़प्पा संस्कृति के मुख्य केन्द्रों को अनाज, मनके तथा ताँबा भेजा जाता था।
- ताँबे का प्रयोग, अस्त्र-शस्त्र तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले उपकरण, बर्तन एवं आभूषण बनाने में होता था ।

7. रंगमहल (हनुमानगढ़) :

- रंगमहल हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती (वर्तमान में घग्घर) नदी के पास स्थित है ।
- यह **एक ताम्र युगीन सभ्यता** है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य **डॉ. हन्नारिड** के निर्देशन में **स्वीडिश दल द्वारा 1952-54 ई.** में किया गया ।
- ये मृद्भाण्ड चाक से बने होते थे तथा ये पतले तथा चिकने होते थे ।
- यहाँ से कुषाण कालीन तथा उससे पहले की **105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई है जिनमें कुछ **पंचमार्क मुद्राएँ** भी हैं ।
- यहाँ से **ब्राह्मी लिपि** में नाम अंकित **दो कांसे** की सीलें भी प्राप्त हुई है ।
- यहाँ से उत्खनन में **डॉ. हन्नारिड** को प्राप्त मिट्टी का **कटोरा स्वीडन के लूण्ड** संग्रहालय में सुरक्षित है।
- यहाँ के निवासी मुख्य रूप से **चावल की खेती** करते थे।
- यहाँ के मकानों का निर्माण **ईंटों से** होता था ।
- यहाँ से प्राप्त **मृद्भाण्ड मुख्यत : लाल या गुलाबी रंग** के थे ।
- यहाँ से गांधार शैली की मृण मूर्तियाँ, टोंटीदार घड़े, घण्टाकार मृद्पात्र एवं **कनिष्क कालीन मुद्राएँ** प्राप्त हुई हैं ।
- रंग महल से ही गुरु-शिष्य की मिट्टी की मूर्ति प्राप्त हुई है ।
- इसे **कुषाण कालीन सभ्यता** के समान माना जाता है । **(परीक्षा के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- रंगमहल में बसने वाली बस्तियों के तीन बार बसने एवं उजड़ने के प्रमाण मिले हैं ।

8. ओझियाना (भीलवाड़ा) :

- **भीलवाड़ा के बदनोर** के पास **खारी नदी** के तट पर स्थित यह स्थल ताम्र युगीन **आहड़ संस्कृति** से संबंधित है ।
- इस स्थल का उत्खनन **बी. आर. मीणा** तथा **आलोक त्रिपाणी** द्वारा वर्ष 1999-2000 में किया गया ।
- यह पुरातात्विक स्थल पहाड़ी पर स्थित था जबकि **आहड़ संस्कृति** से जुड़े अन्य स्थल नदी घाटियों में पनपे थे ।
- यहाँ से वृषभ तथा गाय की मृण्मय मूतियां प्राप्त हुई है जिन पर **सफेद रंग** से चित्रण किया हुआ है ।

9. नगरी (चित्तौड़गढ) :

- नगरी नामक पुरातात्विक स्थल चित्तौड़गढ़ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है, जिसका **प्राचीन नाम माध्यमिका** मिलता है ।
- यहाँ पर सर्वप्रथम **उत्खनन कार्य** वर्ष 1904 में **डॉ. डी. आर. भण्डारकर** द्वारा तथा तत्पश्चात् 1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया ।
- यहाँ से **शिवि जनपद** के सिक्के तथा **गुप्त कालीन कला के अवशेष** प्राप्त हुए हैं ।
- प्राचीन नाम 'माध्यमिका' **पतंजलि के महाभाष्य** में मिलता है ।
- यहाँ से ही घोसूण्डी अभिलेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है ।
- नगरी **शिवि जनपद की राजधानी** रही है ।
- यहाँ पर 'कुषाण कालीन स्तर' में नगर की सुरक्षा हेतु निर्मित मजबूत दीवार बनाये जाने के अवशेष प्राप्त हुए हैं ।
- नगरी की खोज **1872 ई. में कार्लाइल** द्वारा की गई ।
- यहाँ से चार **चक्राकार कुएँ** भी प्राप्त हुए हैं ।

10. सुनारी (झुंझुनू) :

- **'सुनारी'** नामक पुरातात्विक स्थल झुंझुनू की खेतड़ी तहसील में काँतली नदी के किनारे स्थित है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया ।
- यहाँ से **लौहा गलाने की प्राचीनतम भट्टियाँ प्राप्त** हुई है ।
- यहाँ से **सलेटी रंग के मृद्भाण्ड** संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं ।
- सुनारी से **मातृ देवी की मृण मूर्तियाँ** तथा धान संग्रहण का कोठा प्राप्त हुआ है ।
- सुनारी से मौर्य कालीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं जिनमें **काली पॉलिश युक्त मृद** पात्र हैं।
- जोधपुरा, नोह तथा सुनारी से शुंग तथा कुषाण कालीन अवशेष भी प्राप्त हुए हैं ।
- सुनारी के निवासी भोजन में **चावल का प्रयोग** करते थे तथा **घोड़ों से रथ खींचते** थे ।
- सुनारी से लौहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लौहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मृद्पात्र भी मिले हैं ।

11. जोधपुरा (जयपुर) :

- जोधपुरा नामक **पुरातात्विक स्थल जयपुर** जिले की **कोटपुतली तहसील में साबी नदी** के किनारे स्थित है ।
- यह एक **लौह युगीन प्राचीन सभ्यता** स्थल है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1972-73 में **आर.सी. अग्रवाल** तथा **विजय कुमार** के निर्देशन में सम्पन्न हुआ ।
- यह **सलेटी रंग की चित्रित मृद्भाण्ड** संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थल था ।
- जोधपुरा से लौह अयस्क से लौह धातु का निष्कर्षण करने वाली भट्टियाँ भी प्राप्त हुई हैं ।
- इस सभ्यता में मानव ने घोड़े का उपयोग रथ के खीचने में करना प्रारम्भ कर दिया था ।
- जोधपुरा में मकान की छतों पर **टाईल्स** का प्रयोग एवं **छप्पर छाने** का रिवाज था ।
- यह सभ्यता 2500 ईसा पूर्व से 200 ई. के मध्य फली-फूली थी ।
- यहाँ **शुंग एवं कुषाण कालीन सभ्यता** स्थल है ।

बूँदी को अपने अधिकार में कर लिया। टोडा के शासक राव सुरतान ने मेवाड़ में आश्रय इस आशा से लिया था कि शायद मेवाड़ से उसे सहायता मिल जाए। राव सुरतान के साथ उसकी पुत्री तारा भी थी, जो अद्वितीय सुंदर और वीरांगना थी। राव सुरतान ने प्रतिज्ञा कर रखी थी, कि वह अपनी पुत्री का विवाह उस शूरवीर से करेगा जो टोडा जीतकर उसे वापस दिलाएगा।

- राणा रायमल के द्वितीय पुत्र जयमल ने तारा की सुंदरता पर आसक्त होकर उससे विवाह करने की जिद की तथा राव सुरतान के साथ अत्यंत ही अशिष्ट व्यवहार किया। क्रुद्ध राव सुरतान ने जयमल को मौत के घाट उतार दिया और राणा को सूचित कर दिया। जयमल की मृत्यु के बाद रायमल के ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराज ने तारा से विवाह करने का निश्चय कर टोडा पर आक्रमण कर जीत लिया।
- कुंवर पृथ्वीराज ने टोडा का राज्य राव सुरतान को सौंप दिया तथा वचनबद्ध राव सुरतान ने तारा का विवाह पृथ्वीराज से कर दिया। राणा रायमल का ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराज था और जयमल दूसरा साँगा तीसरा पुत्र था। जयमल राव सुरतान के हाथों मारा गया तथा सिरोही लौटते समय रास्ते में अपने बहनोई द्वारा दिए गए विषाक्त लड्डू खाने से पृथ्वीराज की मृत्यु हो गई । इसी प्रकार रायमल के दो ज्येष्ठ पुत्रों का स्वर्गवास हो गया।

<u>महाराणा साँगा (1509-1528)</u>
<u>या</u>
<u>राणा साँगा (1509-1528 ईस्वी)</u>

- प्रारंभिक जीवन : राणा साँगा (महाराणा संग्राम सिंह) (राज 1509-1528) उदयपुर में सिसोदिया राजपूत राजवंश के राजा थे तथा राणा रायमल के सबसे छोटे पुत्र थे।
- मेवाड़ योद्धाओं की भूमि है, यहाँ कई शूरवीरों ने जन्म लिया और अपने कर्तव्य का प्रवाह किया । उन्हीं उत्कृष्ट मणियों में से एक थे राणा साँगा, साँगा का पूरा नाम महाराणा संग्राम सिंह था । वैसे तो मेवाड़ के हर राणा की तरह इनका पूरा जीवन भी युद्ध के ईर्द-गिर्द ही बीता लेकिन इनकी कहानी थोड़ी अलग है । एक हाथ, एक आँख, और एक पैर के पूर्णतः क्षतिग्रस्त होने के बावजूद इन्होंने ज़िन्दगी से हार नहीं मानी और कई युद्ध लड़े।
- राणा साँगा अदम्य साहसी थे। इन्होंने सुल्तान मोहम्मद शासक माण्डु को युद्ध में हराने व बन्दी बनाने के बाद उन्हें उनका राज्य पुनः उदारता के साथ सौंप दिया, यह उनकी बहादुरी को दर्शाता है। बचपन से लगाकर मृत्यु तक इनका जीवन युद्धों में बीता। इतिहास में वर्णित है, कि महाराणा संग्राम सिंह की तलवार का वजन 20 किलो था ।
- राणा रायमल के तीनों पुत्रों (कुंवर पृथ्वीराज, जयमल तथा राणा साँगा) में मेवाड़ के सिंहासन के लिए संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। एक भविष्यकर्ता के अनुसार साँगा को मेवाड़ का शासक बताया जाता है ऐसी स्थिति में कुंवर पृथ्वीराज व जयमल अपने भाई राणा साँगा को मौत के घाट उतारना चाहते थे, परन्तु साँगा किसी प्रकार यहाँ से बचकर अजमेर पलायन कर जाते हैं तब सन् 1509 में अजमेर के कर्मचन्द पंवार की सहायता से राणा साँगा को मेवाड़ राज्य प्राप्त हुआ । महाराणा साँगा ने सभी राजपूत राज्यों को संगठित किया और सभी राजपूत राज्य को एक छत्र के नीचे लाएं। उन्होंने सभी राजपूत राज्यों से संधि की और इस प्रकार महाराणा साँगा ने अपना साम्राज्य उत्तर में पंजाब सतलज नदी से लेकर दक्षिण में मालवा को जीतकर नर्मदा नदी तक कर दिया। पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में बयाना भरतपुर ग्वालियर तक अपना राज्य विस्तार किया इस प्रकार मुस्लिम सुल्तानों की डेढ़ सौ वर्ष की सत्ता के इतने बड़े क्षेत्रफल पर हिंदू साम्राज्य कायम हुआ इतने बड़े क्षेत्र वाला हिंदू सम्राज्य दक्षिण में विजयनगर समाज्य ही था। दिल्ली सुल्तान इब्राहिम लोदी को खातौली व बाड़ी के युद्ध में 2 बार परास्त किया और गुजरात के सुल्तान को हराया व मेवाड़ की तरफ बढ़ने से रोक दिया। बाबर को खानवा के युद्ध में पूरी तरह से राणा ने परास्त किया और बाबर से बयाना का दुर्ग जीत लिया। इस प्रकार राणा साँगा ने भारतीय इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ दी। राणा साँगा 16वीं शताब्दी के सबसे शक्तिशाली शासक थे, इनके शरीर पर 80 घाव थे। इनको हिंदुपत की उपाधि दी गयी थी। इतिहास में इनकी गिनती महानायक तथा वीर के रूप में की जाती है ।
- महाराणा साँगा के पिता रायमल व माता **श्रृंगार देवी** थी।
- महाराणा साँगा का जन्म 12 अप्रैल, 1482 को हुआ तथा साँगा 1509 ई. में मेवाड़ का शासक बना तथा इनका राज्याभिषेक हुआ ।
- महाराणा साँगा को हिन्दूपत व सैनिकों का भग्नावशेष (शरीर पर लगभग 80 घाव) नामों से जाना जाता है। - महाराणा साँगा राजस्थान का अंतिम हिन्दू राजा था, जिसके सेनापतित्व में पूरे राजपूतों ने मुगलों को भारत से बाहर निकालने का प्रयास किया।

<u>खतौली का युद्ध</u> - राणा साँगा ने 1517 में खातौली (बूँदी) के युद्ध में इब्राहिम लोदी को परास्त किया।

<u>बाड़ी का युद्ध</u> - राणा साँगा ने 1518 में बाड़ी (धौलपुर) के युद्ध में इब्राहिम लोदी को परास्त किया।

<u>गागरोन का युद्ध</u> - राणा साँगा ने 1519 में गागरोन के युद्ध (झालावाड़) में मालवा के महमूद खिलजी द्वितीय को पराजित किया।

<u>बयाना का युद्ध</u> - 16 फरवरी, 1527 ई. में हुये बयाना के युद्ध में साँगा के सैनिकों ने बाबर के सैनिकों (दुर्ग रक्षक बाबर का बहनोई मेहंदी ख्वाजा) को हराकर बयाना दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

- **खानवा का युद्ध** - यह युद्ध राणा साँगा एवं बाबर के मध्य 17 मार्च, 1527 को लड़ा गया। खानवा के युद्ध में राणा साँगा बाबर से पराजित हो गया। खानवा के युद्ध (रुपवास-भरतपुर) में बाबर ने 'जिहाद/धर्म युद्ध का नारा दिया। इस युद्ध में साँगा ने **'पाती पेरवन** प्रथा का प्रयोग किया जिसके तहत इसमें राजस्थान के 7 राजा, 9 राव तथा 104 सामन्त शामिल हुए। बाबर ने इस युद्ध में **'तुलुगमा युद्ध** पद्धति का प्रयोग किया जिसमें उनकी सेना के पास तोपें एवं बंदूकें थी। युद्ध में साँगा के सिर पर एक तीर लगा जिससे साँगा घायल हो थे, उन्होंने अपना राजचिह्न एवं हाथी सादड़ी के झाला अज्जा को दे दिए एवं युद्ध का मैदान छोड़कर बसवा गांव (दौसा) पहुँच गए । बसवा (दौसा) में साँगा का चबूतरा बना हुआ है।
- साँगा को **कालपी (मध्यप्रदेश)** नामक स्थान पर साथियों ने जहर देकर 30 जनवरी, 1528 ई. को मार दिया।
- महाराणा साँगा का दाह संस्कार माण्डलगढ़ में किया गया, जहाँ इसकी छतरी बनी हुई है।
- महाराणा साँगा ने इब्राहीम लोदी के भाई **महमूद लोदी** व **हसन खाँ मेवाती** दो अफगानों को शरण दी थी।
- मेवाड़ के महाराणा साँगा ने प्रतिज्ञा ली थी, कि "जब तक वह अपने शत्रु को पराजित नहीं कर लेगा, तब तक चित्तौड़ के फाटक में प्रवेश नहीं करेगा"

राणा विक्रमादित्य :-

- महाराणा साँगा की मृत्यु के बाद 5 फरवरी, 1528 के आस-पास चित्तौड़ राज्य का स्वामी राणा रतनसिंह हुआ। महाराणा रतन की 1531 ई. में बूँदी के राजा सूरजमल के साथ लड़ाई में मृत्यु हो गई साथ ही सूरजमल भी मारा गया। फिर रतनसिंह का छोटा भाई विक्रमादित्य 1531 ई. में मेवाड़ का राजा बना। उस समय विक्रमादित्य छोटी उम्र में था। अतः राज कार्य का संचालन उनकी माता हाड़ा रानी कर्मवती करती थीं । उस समय गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने सन् 1533 ई. मे चित्तौड़ पर आक्रमण किया।
- रानी कर्मवती ने बादशाह हुमायूँ से सहायता मिलने की आशा पर अपना एक दूत हुमायूँ के पास भेजा लेकिन हुमायूँ ने सहायता नहीं की। अंततः कर्मवती ने सुल्तान से संधि कर ली। 24 मार्च, 1533 ई. को सुल्तान चित्तौड़ से लौट गया परन्तु 1534 ई. में सुल्तान ने फिर आक्रमण किया। महाराणा विक्रमादित्य को उदयसिंह सहित बूँदी भेज दिया गया और युद्ध तक देवलिये के रावत बाघसिंह को महाराणा का प्रतिनिधि बनाया गया। वीर रावत बाघसिंह चित्तौड़ दुर्ग के पाड़नपोल दरवाजे के बाहर तथा राणा सज्जा व सिंहा हनुमान पोल के बाहर लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- लड़ाई में सेनापति **रूमी खाँ** के नेतृत्व में बहादुर शाह की सेना विजयी हुई और हाडी रानी कर्मवती ने जौहर किया। यह चित्तौड़ का दूसरा साका कहलाता है। लेकिन बादशाह हुमायूँ ने तुरंत ही बहादुरशाह पर हमला कर दिया। जिससे सुल्तान कुछ साथियों के साथ माण्डू भाग गया। बहादुर शाह के हारने पर मेवाड़ के सरदारों ने पुनः चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया। फिर विक्रमादित्य पुनः वहाँ के शासक हो गए।
- बनवीर ने उदयसिंह का वध करना चाहा लेकिन स्वामीभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदय सिंह को बचा लिया। मेवाड़ का स्वामी बनकर बनवीर राज्य करने लगा। उदयसिंह द्वितीय को लेकर पन्नाधाय कुंभलनेर पहुंची। वहां के किलेदार **आशा देवपुरा** ने उन्हें अपने पास रख लिया।

महाराणा उदयसिंह (1537-1572 ई.)

- 1537 में कुछ सरदारों ने उदयसिंह को मेवाड़ का स्वामी मानकर कुम्भलगढ़ में राज्याभिषेक कर दिया। उदयसिंह ने सेना एकत्रित कर कुंभलगढ़ से ही चित्तौड़ पर चढ़ाई की। बनवीर मारा गया। 1540 ई. में उदयसिंह अपने पैतृक राज्य का स्वामी बना। 1559 ई. में महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर की नींव डाली।
- मुग़ल बादशाह अकबर ने 23 अक्टूबर, 1567 को चित्तौड़ किले पर आक्रमण किया। महाराणा उदयसिंह ने मालवा के पदच्युत शासक राज बहादुर को अपने यहाँ शरण देकर अकबर के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण करने का अवसर प्रदान कर दिया। महाराणा उदयसिंह राठौड़ जयमल और रावत पत्ता को सेनाध्यक्ष नियुक्त कर कुछ सरदारों के साथ मेवाड़ के पहाड़ों में चले गए। अकबर से युद्ध में **जयमल और कल्ला राठौड़** हनुमान पोल व भैरव पोल के बीच और पत्ता रामपोल के भीतर वीरगति को प्राप्त हुए।
- राजपूत स्त्रियों ने जौहर किया। **25 फरवरी, 1568** को अकबर ने किले पर अधिकार कर लिया। यह चित्तौड़ दुर्ग का **तीसरा साका** था। **जयमल और पत्ता** की वीरता पर प्रसन्न होकर अकबर ने आगरा जाने पर हाथियों पर चढ़ी हुई, उनकी पाषाण की मूर्तियां बनवाकर किले के द्वार पर खड़ी करवाई **महाराणा उदयसिंह** का 28 फरवरी, 1572 ई. को गोगुन्दा में होली के दिन देहांत हो गया। जहां उनकी छतरी बनी हुई है।

महाराणा प्रताप सिंह (1572-1597 ईस्वी.)

जन्म - 9 मई, 1540

जन्म स्थान - कुम्भलगढ़ दुर्ग

पिता – राणा उदय सिंह

माता - महाराणी जयवंता बाई

विवाह - उन्होंने 11 शादियाँ की थी - महारानी अजब्धे पंवार, अमरबाई राठौड़, शहमति बाई हाडा, लखाबाई, जसोबाई चौहान और 6 पत्नियाँ

संतान - अमर सिंह, भगवान दास और 17 पुत्र

प्रारम्भिक जीवन और बचपन

- प्रताप का जन्म भारतीय तिथि के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल की तृतीय को हुआ था, इस कारण आज भी प्रतिवर्ष इस दिन महाराणा प्रताप का जन्म दिवस मनाया जाता है ।
- राणा उदय सिंह द्वितीय के 33 पुत्र थे, जिनमें प्रताप सिंह सबसे बड़े पुत्र थे, प्रताप बचपन से ही स्वाभिमानी और देशभक्त थे, साथ ही वो बहादुर और संवेदनशील भी थे। उन्हें खेलों और हथियार के प्रशिक्षण में रुचि थी। वास्तव में प्रताप को मेवाड़ के प्रति अपनी जिम्मेदारी की समझ बहुत जल्द आ गयी थी, इस कारण बहुत कम उम्र में ही उन्होंने हथियार, घुड़सवारी, युद्ध का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। वो सभी राजकुमारों में सबसे ज्यादा प्रतिभावान और बलशाली राजकुमार थे। महाराणा प्रताप जयमल मेडतिया के शिष्य थे, जो बहुत वीर था, जब **बहलोल खान** ने जयमल को युद्ध के लिए ललकारा तो उन्होंने खान के घोड़े के साथ उसके दो टुकड़े कर दिए।
- 1567 में चित्तौड़ को अकबर की मुग़ल सेना ने चित्तौड़ को सब तरफ से घेर लिया था, ऐसे में मुगलों के हाथों में पड़ने की जगह महाराणा उदयसिंह ने अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाने का निश्चय किया, हालांकि उस समय भी राजकुमार प्रताप वहीं रहकर युद्ध करना चाहते थे लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियां होने के कारण उन्हें अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाना पड़ा। उदयसिंह और उनके मंत्रियों ने गोगुन्दा में ही अस्थायी शासन शुरू किया।

कुंवर प्रताप से महाराणा प्रताप

- उदयसिंह ने मरने से पहले अपनी सबसे छोटी रानी के **पुत्र जगमाल** को राजा नियुक्त किया और प्रताप ने सबसे बड़ा और योग्य पुत्र होते हुए भी ये स्वीकार कर लिया, लेकिन मंत्री इस बात से सहमत नहीं हुए क्योंकि जगमाल में राजा बनने के गुण नहीं थे। **1572 में उदयसिंह** की मृत्यु हो गयी। इसलिए सबने मिलकर ये निर्णय लिया कि सत्ता महाराणा प्रताप को दी जायेगी, महाराणा प्रताप सिंह ने भी उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए, **1 मार्च 1572** को गद्दी संभाल ली, इस कारण जगमाल को क्रोध आ गया और वो अकबर की सेना में शामिल होने के लिए अजमेर के लिए रवाना हो गया और अकबर की मदद के बदले जहाजपुर की जागीर हासिल करना ही उसकी मंशा थी।

महाराणा प्रताप और अकबर

- महाराणा प्रताप के समय अकबर दिल्ली का शासक था, उसकी रणनीति थी कि वो हिन्दू राजाओं की शक्ति को अपने अधीन करके उन पर शासन करता था। इसी क्रम में युद्ध को नजरअंदाज करते हुए बहुत से राजपूतों ने युद्ध की जगह अपनी बेटियों के डोली अकबर के हरम में भेज दी, जिससे कि संधि हो सके, लेकिन मेवाड़ ऐसा राज्य नहीं था, यहाँ अकबर को काफी संघर्ष करना पड़ा। उदयसिंह के समय राजपूतों ने जब चित्तौड़ छोड़ दिया था तो मुगलों ने शहर पर कब्जा कर लिया हालांकि वो पूरे मेवाड़ को हासिल करने में नाकाम रहे, और अकबर पूरे हिन्दुस्तान पर शासन करना चाहता था इसलिए पूरा मेवाड़ उसका लक्ष्य था। केवल 1573 में ही अकबर ने 6 बार संधि वार्ता प्रस्ताव भेजे लेकिन प्रताप ने सबको अस्वीकार कर दिया, अकबर के पांच बार संधि वार्ता भेजने के बाद प्रताप ने अपने बेटे अमरसिंह को अकबर के दरबार में संधि अस्वीकार करने के लिए भेजा, इसके बाद सबसे अंतिम प्रस्ताव अकबर के बहनोई मानसिंह लेकर आये थे और अंतिम बार भी संधि प्रस्ताव के नहीं मानने से अकबर बेहद क्रोधित हुआ और उसने मेवाड़ पर हमला कर दिया।
- वैसे कहा जाता है कि अकबर ने राणा प्रताप से ये तक कहा था कि वो यदि अकबर से संधि कर ले तो अकबर प्रताप को आधा हिन्दुस्तान दे देगा लेकिन महाराणा प्रताप ने किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया

हल्दीघाटी का युद्ध

- 1576 में अकबर ने राजपूत सेनापति मानसिंह प्रथम और आसफ खान को प्रताप पर आक्रमण करने के लिए भेजा, जबकि प्रताप ने ग्वालियर के राम शाह तंवर और उनके तीन पुत्र रावत कृष्णादासजी चुडावत, मानसिंह झाला और चन्द्रसेन जी राठौड़ और अफगान से **हाकिम खान सुर** के अलावा भील समुदाय के मुखिया **राव पूंजा** की मदद से एक छोटी सी सेना गठित की। मुग़ल सेना में जहाँ 80,000 सैनिक थे, वहीं राजपूत सेना मात्र 20,000 सैनिकों की थी। इस तरह उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर हल्दीघाटी में युद्ध सम्मुख युद्ध शुरू हआ। यह युद्ध **18 जून 1576** को 4 घंटे के लिए हुआ, मुग़ल सेना को प्रताप के भाई शक्ति सिंह ने गुप्त मार्ग बता दिया, जिससे मुगलों को आक्रमण की दिशा मिल गयी। मुग़ल सेना के घुड़सवारों का नेतृत्व **मानसिंह प्रथम** कर रहे थे, प्रताप ने मानसिंह का सामना खुद करने का निश्चय किया और अपना घोड़ा उनके सामने ले गए लेकिन चेतक और प्रताप दोनों मानसिंह के हाथी से घायल हो गए। इसके बाद मानसिंह झाला ने अपना कवच प्रताप से बदल लिया था जिससे कि मुग़ल सेना में भ्रम पैदा हो सके, और राणा प्रताप बचकर निकल सके। हल्दीघाटी के युद्ध के बाद अरावली के कुछ हिस्सों को छोडकर पुरा मेवाड़ मुगलों के हाथ में चला गया ।

चौहान वंश का इतिहास

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया** ।
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया** ।
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था
4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता हैं।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता हैं।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की**।
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की**।
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुडवाकर अढ़ाई दिन का झोपडाऽ बनवाया**।
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि "**वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था**"।

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

रायपिथौरा – पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री – कैमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में '**महोबा के युद्ध/तुमुल का युद्ध**' (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य तराइन के मैदान करनाल (हरियाणा) में हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की सेना की ओर से गोविंदराज तोमर ने तीर चलाया जिससे मोहम्मद गौरी घायल होकर वापस गजनी चला गया। इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान तृतीय विजय हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

तराइन का द्वितीय युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान तथा मौहम्मद गौरी बीच लड़ा गया। इसमें मौहम्मद गौरी की विजय हुई। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के स्वसुर जयचंद ने मौहम्मद गौरी का साथ दिया, क्योकि पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का हरण कर उससे विवाह किया था।

1. पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि **चंद्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ। लिखा**
2. **जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ लिखा।**
3. सूफी संत **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वी राज चौहान के समय अजमेर आये।**
4. पृथ्वीराज चौहान तृतीय के घोड़े का नाम नाट्यरंभा था।

रणथम्भौर के चौहान

रणथम्भौर और दिल्ली सल्तनत

- हम्मीर चौहान (1282-1301 ई.) अपने पिता जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र था। सभी पुत्रों में योग्य होने के कारण उसका राज्यारोहण उत्सव जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही 1282 ई. में सम्पन्न करवा दिया था।
- वह रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था और उसके शासनकाल की जानकारी अनेकानेक ऐतिहासिक साधनों से प्राप्त होती है। मुस्लिम इतिहासकारों, अमीर खुसरो तथा जियाउद्दीन बरनी की रचनाओं के अलावा न्यायचंद्र सूरी के हम्मीर महाकाव्य, चंद्रशेखर के सुर्जन चरित्र और बाद में लिखे गये हिन्दी ग्रन्थों - जोधराजकृत हम्मीर रासो तथा चंद्रशेखर के हम्मीर हठ में हमें हम्मीर की शूरवीरता तथा विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- दिग्विजय के बाद हम्मीर ने कोटि यज्ञों का आयोजन किया जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- मेवाड़ के शासक समरसिंह को पराजित कर हम्मीर ने अपनी धाक सम्पूर्ण राजस्थान में जमा दी।

हम्मीर और जलालुद्दीन खिलजी-

- हम्मीर को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका इसलिए मिल गया कि इस दौरान दिल्ली में कमजोर सुल्तानों के कारण अव्यवस्था का दौर चल रहा था।
- 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने हम्मीर की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। सुल्तान ने झाँई पर अधिकार कर रणथम्भौर को घेर लिया किन्तु सभी प्रयत्नों की असफलता के बाद शाही सेना को दिल्ली लौट जाना पड़ा।
- सुल्तान ने 1292 ई. में एक बार फिर रणथम्भौर विजय का प्रयास किया। हम्मीर के सफल प्रतिरोध के कारण इस बार भी उसे निराशा ही हाथ लगी।
- जलालुद्दीन ने यह कहते हुए दुर्ग का घेरा हटा लिया कि "मैं ऐसे सैंकड़ों किलों को भी मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के इन अभियानों का आँखों देखा वर्णन **अमीर खुसरो ने 'मिफ्ता-उल-फुतूह'** नामक ग्रंथ में किया है।

हम्मीर और अलाउद्दीन खिलजी -

- 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये जिनके निम्नलिखित कारण थे -

1. रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस अभेद दुर्ग पर अधिकार कर राजपूत नरेशों पर अपनी धाक जमाना चाहता था।
2. रणथम्भौर दिल्ली के काफी निकट था। इस कारण यहाँ के चौहानों की बढ़ती हुई शक्ति को अलाउद्दीन खिलजी किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर सकता था।
3. अलाउद्दीन खिलजी से पहले उसके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए दो बार प्रयास किए थे किन्तु वह असफल रहा। अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा की पराजय का बदला लेना चाहता था।
4. अलाउद्दीन खिलजी एक महत्त्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। रणथम्भौर पर आक्रमण इसी नीति का परिणाम था।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय - 5

स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम)

c	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15 नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	विसनसिंह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7 अप्रैल , 1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15 अप्रैल , 1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2 जनवरी, 1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।
11.	प्रतापगढ़	सामन्तसिंह	5 अक्टूबर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

c	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
12.	डूंगरपुर	जसवन्त सिंह द्वितीय	1818 ई.	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
13.	बाँसवाड़ा	उम्मेदसिंह	25 दिसम्बर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
14.	सिरोही	शिवसिंह	11 सितम्बर, 1823	संधि के तीन वर्ष तक खिराज से मुक्त उसके बाद आय के प्रति रुपये पर छः आना।
15.	झालावाड़	मदनसिंह	10 अप्रैल, 1838	80,000 रु. वार्षिक।

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही राजपूत राज्यों पर मुग़ल केन्द्रीय सत्ता का नियंत्रण ढीला पड़ गया।
- सभी राजपूत राज्य अपने राज्य का विस्तार करने तथा पड़ोसी राज्य पर राजनैतिक वर्चस्व स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयत्न में लग गए।
- इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरूप राजपूत राज्यों में पारस्परिक संघर्ष बढ़ गये।
- शासकों ने पारस्परिक संघर्षों में सहायता प्राप्त करने के लिए बाहरी ताकतों (मराठा, अंग्रेज, होल्कर आदि) का सहारा लेने लगे।
- जब राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष में मराठों का हस्तक्षेप हुआ तो राजपूताना के शासकों ने मराठा के विरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायता माँगी लेकिन अंग्रेजों ने इन प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय अंग्रेजों की नीति राजपूताना के लिए मराठों से युद्ध करने की नहीं थी।
- भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन 1600 ई. में हुआ था।
- 1757 ई. में प्लासी युद्ध के पश्चात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहली बार भारत में बंगाल में) राजनीतिक सत्ता प्राप्त की।
- रॉबर्ट क्लाइव सन् 1757 में बंगाल का प्रथम गवर्नर बना।
- 1764 ई. के बक्सर युद्ध के पश्चात् हुई इलाहाबाद संधि ने कम्पनी को भारत में पूर्णतः राजनीतिक शक्ति प्रदान की।
- वारेन हेस्टिंग्स 1772 ई. में बंगाल के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- वारेन हेस्टिंग्स ने सुरक्षा घेरे की नीति (पॉलिसी ऑफ रिंग फेंस) को अपनाया जिसके अनुसार कम्पनी द्वारा अपने अधिकृत प्रदेशों को शत्रुओं से सुरक्षा के लिए पड़ौसी राज्यों के साथ मैत्री संधि कर उन्हें बफर राज्यों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।
- लॉर्ड कार्नवालिस ने भारतीय शासकों के मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई ।
- 1798 ई. में लॉर्ड वेलेजली ने देशी राज्यों के साथ सहायक संधि की नीति अपनाई।
- इस नीति के तहत देशी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा व विदेशी नीति का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर था जिसका खर्च संबंधित राज्य को उठाना पड़ता था।
- कम्पनी इस हेतु उस राज्य में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट की नियुक्ति करती थी एवं सुरक्षा हेतु उस देशी राज्य के खर्च पर अपनी सेना रखती थी।
- भारत में प्रथम सहायक संधि 1798 ई. में हैदराबाद के निजाम के साथ की गई।
- अगस्त 1803 ई. में आंग्ल-मराठा के द्वितीय युद्ध में मराठों की पराजय के पश्चात् मराठा पेशवा दौलतराव द्वारा 30 दिसम्बर, 1803 को अंग्रेजों के साथ सुर्जीअर्जन गाँव संधि कर जयपुर एवं जोधपुर राज्यों को अंग्रेजों को सौंप दिया।
- राजस्थान में सर्वप्रथम भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीतसिंह के साथ 29 सितम्बर 1803 को लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि की।
- आपसी अविश्वास के कारण यह संधि क्रियान्वित न हो पायी। इससे रुष्ट होकर लॉर्ड लेक के नेतृत्व में अंग्रेजों ने

- करौली रियासत में - मदनपाल
- टोंक रियासत में - नवाब वजीरुद्दौला
- बूँदी रियासत में - रामसिंह
- अलवर रियासत में - विनयसिंह
- जैसलमेर रियासत में – रणजीत सिंह
- झालावाड रियासत में – पृथ्वीसिंह
- प्रतापगढ़ रियासत में – दलपत सिंह
- बाँसवाड़ा रियासत में - लक्ष्मण सिंह और
- डूंगरपुर रियासत में - उदयसिंह थे ।

राजस्थान में क्रांति के समय 6 सैनिक छावनियां थी जिनमें से खेरवाड़ा (उदयपुर) और ब्यावर (अजमेर) सैनिकों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया था ।

सैनिक छावनियां (Military Encampment)

1. नसीराबाद (अजमेर)
2. नीमच (मध्य प्रदेश)
3. एरिनपुरा (पाली)
4. देवली (टोंक)
5. ब्यावर (अजमेर)
6. खेरवाड़ा (उदयपुर)

NOTE – खैरवाड़ा व ब्यावर सैनिक छावनीयों ने इस सैनिक विद्रोह में भाग नहीं लिया।

राजस्थान में 1857 की क्रांति का आरम्भ

- 1857 Revolution के समय भारत का गवर्नर जनरल " लॉर्ड केनिंग " था ।
- जब AGG जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस को मेरठ में सैनिक क्रांति की सूचना मिली तब वह माउन्ट आबू में था।
- AGG को मेरठ में क्रांति की सूचना 19 मई 1857 को मिली ।
- जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस ने अजमेर के मैगजीन दुर्ग में तैनात 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री (NI) को नसीराबाद भेज दिया।
- मैगजीन दुर्ग में अंग्रेजों का शस्त्रागार तथा सरकारी खजाना रखा हुआ था।
- इस दुर्ग का नाम अकबर द्वारा रखा गया था।
- AGG ने देशी राजाओं को पत्र लिखकर 1817-1818 की सहायक संधियों का स्मरण कराया तथा क्रांति के दमन हेतु सहयोग माँगा ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त के प्रशासनिक नियंत्रण में था।
- उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त का मुख्यालय आगरा में था और इस प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलवीन था।

नसीराबाद में क्रांति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति का बिगुल नसीराबाद छावनी के सैनिकों ने बजाया।
- यहाँ अजमेर से अचानक भेजी गई 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों में असन्तोष व्याप्त हो गया था । इसके अतिरिक्त सरकार ने चर्बी वाले कारतूसों का विरोध होने के कारण इसके प्रयोग को बंद करने के आदेश दिए जिससे सैनिकों का संदेह और भी दृढ हो गया ।
- 30 वीं नेटिव इन्फेंट्री यहाँ पहले से ही तैनात थी।
- 28 मई 1857 को 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों ने विद्रोह कर अपने अधिकारी प्रिचार्ड का आदेश मानने से इंकार कर दिया।
- विद्रोही सैनिकों ने छावनी में मौजूद अंग्रेजों के मेजर स्पोटिस वुड तथा न्यूबरी की हत्या कर दी और दिल्ली कूच कर गए।
- बख्तावर सिंह द्वारा यहाँ विद्रोहियों का नेतृत्व किया गया।
- लेफ्टिनेंट माल्टर, व लेफ्टिनेंट हेथकोट के नेतृत्व में मेवाड़ के सैनिकों ने विद्रोहियों का पीछा किया लेकिन असफल रहे।

नीमच में क्रांति

- 2 जून 1857 को नीमच में कर्नल एबॉट ने हिन्दू व मुस्लिम सैनिकों को अंग्रेजों के प्रति वफादारी के लिए गीता व कुरान की शपथ दिलाई।
- अवध के एक सैनिक मोहम्मद अली बेग ने इसका विरोध किया ओर कर्नल एबॉट की हत्या कर दी।
- 3 जून 1857 को नीमच छावनी में क्रांति भड़क गई । यहाँ हीरालाल द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया।
- यहाँ मौजूद 40 अंग्रेजों ने भागकर डूंगला गाँव में रूंगाराम किसान के यहाँ शरण ली।
- मेवाड़ के सैनिक इन्हें उदयपुर ले गये जहाँ महाराणा स्वरूप सिंह ने इन्हें जगमंदिर पैलेस में ठहराया।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति के दमन में अंग्रेजों का साथ देने वाला राजपूताने का पहला शासक मेवाड़ का स्वरूप सिंह था।
- नीमच के विद्रोही सैनिकों ने आगरा पहुँचकर वहाँ जेल में बन्द कैदियों को मुक्त कर दिया। विद्रोहियों ने आगरा के सरकारी खजाने से एक लाख छब्बीस हजार रुपये लूट लिये।
- नीमच के सैनिकों ने देवली छावनी होते हुए दिल्ली कूच किया।
- शाहपुरा के शासक लक्ष्मण सिंह ने नीमच के विद्रोही सैनिकों को सहायता व शरण दी।

एरिनपुरा में क्रांति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एरिनपुरा छावनी के सैनिकों ने निभाई।

कला संस्कृति

अध्याय – I

वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ -

किले और स्मारक (छतरियाँ)

राजस्थान के प्रमुख किले (दुर्ग)

- राजा - महाराजाओं के रहने व उनका खजाना सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग / गढ़ / किला का निर्माण किया जाता था जिसमें अनेक महीनों का राशन व पानी का भण्डारण होता था।
- दुर्ग में महल, शस्त्रागार, राजकीय आवास, सैनिक छावनियाँ , तालाब , कुण्ड छतरियाँ आदि होते थे।
- भारत में सर्वप्रथम दुर्ग के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं जिसमें नगर के दो भाग थे-
  (i) दुर्गीकृत (ii) अदुर्गीकृत दुर्ग
- भारत में सर्वाधिक दुर्ग महाराष्ट्र में जबकि राजस्थान का दुर्गों में तीसरा स्थान है।
- राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग जयपुर जिले में हैं ।
- दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनुस्मृति में हुआ है। मनुस्मृति में छः प्रकार के दुर्ग बताये गये हैं इनमें गिरि दुर्ग सर्वश्रेष्ठ है।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सप्तांग सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग को बताया है।

- **शुक्र नीति के अनुसार 9 प्रकार के दुर्ग बताए गए जो निम्न हैं-**
- शुक्रनीति में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

(1.) एरन दुर्ग

- यह दुर्ग खाई, काँटों तथा कठोर पत्थरों से - निर्मित होता है।
- उदाहरण- रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग

(2.)धान्वन (मरुस्थल) दुर्ग

- ये दुर्ग चारों ओर रेत के ऊँचे टीलों से घिरे होते हैं।
- उदाहरण- जैसलमेर , बीकानेर व नागौर के दुर्ग ।

(3.)औदक दुर्ग (जलदुर्ग)

- ये दुर्ग चारों ओर पानी से घिरे होते हैं।
- उदाहरण- गागरोण का दुर्ग, भैंसरोड़गढ़ दुर्ग।

(4.) गिरि दुर्ग

- ये पर्वत एकांत में किसी पहाड़ी पर स्थित होता है तथा इसमे जल संचय का अच्छा प्रबंध होता है।
- उदाहरण- कुम्भलगढ़ , तारागढ़, जयगढ़, नाहरगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जोधपुर)

(5.) सैन्य दुर्ग

- जो व्यूह रचना में चतुर वीरों से व्याप्त होने से अभेद्य हो।
- ये दुर्ग सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं।

(6.) सहाय दुर्ग

- जिसमें वीर और सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।

(7.)वन दुर्ग

- जो चारों ओर वनों से ढका हुआ हो और कांटेदार वृक्ष हो।
- उदाहरण- सिवाना दुर्ग , त्रिभुवनगढ़ दुर्ग , रणथम्भौर दुर्ग।

(8.) पारिख दुर्ग

- वे दुर्ग जिनके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो।
- उदाहरण-लोहागढ़ दुर्ग , भरतपुर।

(9.) पारिध दुर्ग

- जिसके चारों ओर पत्थर तथा मिट्टी से बनी बड़ी - बड़ी दीवारों का सुदृढ़ परकोटा हो।
- उदाहरण-चित्तौड़गढ़ , कुम्भलगढ़ दुर्ग।

- राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक विदेशी आक्रमण हुए -भटनेर (हनुमानगढ़)
- राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण हुए-तारागढ़ (अजमेर)
- राजस्थान का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट- चित्तौड़ दुर्ग
- राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला दुर्ग –सोनारगढ़ (जैसलमेर, कुल 99 बुर्ज)
- राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग -बोरासवाड़ा / टॉडगढ़ (अजमेर)
- राजस्थान का सबसे पुराना दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
- राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग -मोहनगढ़ (जैसलमेर)
- वर्ष 2013 में यूनस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के 6 दुर्ग शामिल किये - 1. चित्तौड़ 2. कुम्भलगढ़ (राजसमंद) 3. गागरोन (झालावाड़) 4. जैसलमेर 5. रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) 6. आमेर

- **चितौड़गढ़ का किला**

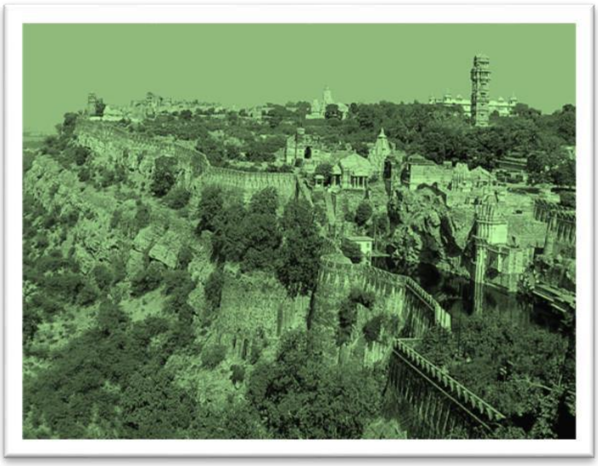

- **उपनाम-** चित्रकूट, राजस्थान का गौरव, दक्षिणी - पूर्वी द्वार, दुर्गों का दुर्ग, दुर्गों का सिरमौर, दुर्गों का तीर्थस्थल,
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- राणा कुम्भा को इस दुर्ग का आधुनिक निर्माता माना जाता है।
- यह दुर्ग दिल्ली मालवा व गुजरात के रास्ते पर स्थित है जिसका सामरिक महत्त्व सर्वाधिक है।
- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा है " गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढैया। "
- इस दुर्ग को राजस्थान का दक्षिणी प्रवेश द्वार व मालवा का प्रदेश द्वारा कहते हैं।
- यह दुर्ग धान्वन दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी में शामिल है।
- यह एकमात्र दुर्ग है जिसमें कृषि होती थी।
- यह दुर्ग गम्भीरी व बेड़च नदी के संगम पर स्थित राजस्थान का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा दुर्ग है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- यह दुर्ग मेसा पठार पर स्थित है जिसकी आकृत्ति व्हेल मछली के समान है।
- इस दुर्ग में प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी को जौहर मेले का आयोजन किया जाता है।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख जल स्रोतों में घी - तेल बावड़ी,कातण बावड़ी, जयमल - फत्ता तालाब, गौमुख कुण्ड, हाथीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, भीमतल कुण्ड,रामकुंड व चित्रांगद मौरी तालाब प्रमुख है।
- **इस दुर्ग में राजस्थान में सर्वाधिक 3 साके हुए जो निम्न हैं-**

  प्रथम साका वर्ष 1303 ई. में हुआ जब रत्नसिंह व अलाउद्दीन के मध्य युद्ध हुआ जिसमें रत्नसिंह ने केसरिया तथा उसकी रानी ने पद्मिनी ने जौहर किया।

  द्वितीय साका वर्ष 1534-35 ई. में हुआ जब विक्रमादित्य के सेनापति बाघसिंह रावत व गुजरात के शासक बहादुरशाह के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति बाघसिंह रावत के नेतृत्व में केसरिया तथा राणा सांगा की रानी कर्मावती के नेतृत्व में जौहर हुआ।

  तृतीय साका वर्ष1567-68 ई. में हुआ जब दिल्ली के बादशाह अकबर व राणा उदयसिंह के सेनापति जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति जयमल – फत्ता के नेतृत्व में केसरिया तथा गुलाब कंवर व फूल कंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ।

- **इस दुर्ग में सात प्रवेश द्वार हैं-**

  1. पाडन पोळ / पावटन पोळ - यहाँ देवलिया के रावत बाघसिंह की छत्री है।
  2. भैरों पोळ - यहाँ कल्ला राठौड़ की 4 खम्भों तथा, जयमल राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी है।
  3. हनुमान पोळ
  4. लक्ष्मण पोळ
  5. जोड़न पोळ
  6. त्रिपोलिया पोळ
  7. रामपोळ - यहाँ फत्ता सिसोदिया का स्मारक बना हुआ है।

❖ **दुर्ग में स्थित दर्शनीय प्रमुख स्थल**

- **कुम्भा द्वारा निर्मित-** कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, चार दीवार, सात द्वार
- मोकल ने समिद्धेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भण्डार/ महल (यहाँ पर स्वामिभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान दिया) व तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- इस दुर्ग में जयमल, फत्ता , कल्ला राठौड़, रैदास , बाघसिंह की छतरियाँ है ।
- दुर्ग में पद्मिनी महल, गौरा - बादल महल, पुरोहितों की हवेली, फतेहमहल, भामाशाह की हवेली, सलूम्बर हवेली, रामपुरा हवेली, आहाड़ा हिंगलू का महल, रतनसिंह महल, आल्हा काबरा की हवेली, राव रणमल की हवेली प्रमुख हैं।

❖ **विजय स्तम्भ**

- यह चित्तौड़ दुर्ग में स्थित इमारत है।
- ऊँचाई-122 फीट
- चौड़ाई 30 फुट है
- 9 मंजिला जिसका
- निर्माण 1440-48 ई.
- इसमें 157 सीढ़ियाँ
- निर्माण में 90 लाख का खर्चा
- शिल्पी जैता,नाथा, पामा, पूंजा
- तीसरी मंजिल पर 9 बार अरबी भाषा में अल्लाह लिखा
- इसकी 8वीं मंजिल पर कोई मूर्ति नहीं

- **विजय स्तम्भ के उपनाम**

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- ***विक्ट्री टावर,***
- ***रोम के टार्जन के समान -फर्ग्युसन***
- ***कुतुबमीनार से श्रेष्ठ - कर्नल जेम्स टॉड***
- ***हिन्दू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि - आर. पी. व्यास***
- ***संगीत की भव्य चित्रशाला – डॉ. सीमा राठौड़***
- ***लोकजीवन का रंगमंच - गोपीनाथ शर्मा***
- ***विष्णु ध्वज - उपेन्द्रनाथ डे कीर्ति***
- *इसका निर्माण राणा कुम्भा ने सारंगपुर विजय (1437 ई.) के उपलक्ष्य में करवाया।*
- *इसके चारों ओर मूर्तियाँ होने के कारण इसे मूर्तियों का अजायबघर कहते हैं।*
- *यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त, 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।*
- *यह राजस्थान पुलिस व माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिह्न है। विनायक दामोदर सावरकर द्वारा स्थापित वर्ष 1904 ई. 'अभिनव भारत' का प्रतीक चिह्न भी विजय स्तम्भ ही था।*
- *इसकी 9 वीं मंजिल पर अत्रि - महेश ने मेवाड़ी भाषा में कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति की रचना की। जिसमें राणा कुम्भा की विजयों का वर्णन है।*

❖ *कीर्ति स्तम्भ*

- *इसका निर्माण 11-12वीं सदी में जैन व्यापारी जीजा ने करवाया।*
- *इसकी ऊँचाई 75 फीट तथा 7 मंजिला हैं।*
- *यह इमारत जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ / ऋषभदेव को समर्पित है।*

❖ *गागरोण का किला*

- *वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एवं आहू नदियों के किनारे मुकन्दरा पहाड़ी पर सामेल नामक स्थान पर स्थित है।*
- *गागरोण का किला एक जलदुर्ग है।*
- *इसका निर्माण 12वीं सदी में डोड राजा विजलदेव परमार ने करवाया।*
- *इसे ' डोडगढ़ ' एवं 'धूलरगढ़' भी कहते हैं*
- *देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था।*
- *यह दुर्ग बिना नींव के है।*
- *यहाँ सन्त पीपा की जन्मस्थली व छतरी है।*
- *यहाँ मीठेशाह की दरगाह (औरंगजेब ने निर्माण), दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, जनाना महल, अचलदास का महल, रंग महल व औरंगजेब द्वारा निर्मित बुलन्द दरवाजा स्थित है ।*
- *प्रवेश द्वार- सूरजपोल , भैरवपोल , गणेशपोल*
- *यहाँ की टकसाल में सालिमशाही रुपया बनता था।*

जैत्रसिंह

- *1303 में जैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।*
- *संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरोण आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहेब' के नाम से जानते हैं। इनकी दरगाह गागरोण के किले में बनी हुई है।*

प्रताप सिंह

- *संत पीपा के नाम से जानते हैं।*
- *इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरोण पर विफल आक्रमण किया था।*
- *संत पीपा की छत्तरी गागरोण में बनी हुई है।*

अचलदास

- *1423 ई. में मालवा का सुल्तान होशंगशाह गागरोण पर आक्रमण करता है।*
- *इस समय गागरोण के किले का पहला साका होता है।*
- *अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।*
- *लीला मेवाड़ी (कुम्भा की बहिन) व उमा सांखला (जांगलू) के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।*
- *शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंचीरी वचनिका' नामक ग्रंथ अनुसार इस दुर्ग में दो साके हुए हैं।*

पाल्हण सिंह (अचलदास का पुत्र, कुम्भा का भांजा)

- *1444 ई. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरोण पर आक्रमण करता है।*
- *कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है।*

अध्याय – 7

मेले एवं त्यौहार

राजस्थान के प्रमुख मेले

अजमेर के मेले

- **पुष्कर मेला** - यह मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक भरता है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा सांस्कृतिक मेला/ सबसे बड़ा रंगीन/रंग बिरंगा / सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों का आगमन वाला मेला है। ख्वाजा साहब का उर्स - यह उर्स अजमेर में रज्जब माह की 1 से 6 तारीख तक भरता है। अढ़ाई दिन के झोपड़े में ।
- **कल्पवृक्ष मेला** - यह मेला मांगलियावास (अजमेर) में श्रावण मास की हरयाली अमावस्या को भरता है।
- **कार्तिक पशु मेला** - यह पशु मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष 2 तक भरता है।

अलवर के मेले

- **चंद्र प्रभु मेला** - यह मेला तिजारा, अलवर में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी व श्रावण शुक्ला दशमी को भरता है।
- **नारायणी माता का मेला** - यह मेला बरवा डूंगरी सरिस्का (अलवर) में वैशाख शुक्ल एकादशी को भरता है।

हनुमानजी का मेला - यह मेला पांडुपोल (अलवर) में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी एवं पंचमी को भरता है।

- **भृर्तहरि मेला** - यह मेला भृर्तहरि (महान योगी भृर्तहरि की तपो भूमि) पर अलवर में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को भरता है। यह कनफटे नाथों की तीर्थस्थली है ।
- **बिलारी माता मेला** - बिलारी माता का यह मेला बिलारी (अलवर) में चैत्र शुक्ला अष्टमी को भरता है।

बाड़मेर के मेले

- **रणछोड़राय का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के खेड़ क्षेत्र में प्रतिवर्ष राधाष्टमी, माघ पूर्णिमा, बैशाख एवं श्रावण मास की पूर्णिमा व कार्तिक पूर्णिमा भादवा सुदी चतुर्दशी को भरता है।
- **मल्लीनाथ पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा क्षेत्र में चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक भरता है।
- **हल्देश्वर महादेव शिवरात्रि मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के पीपलूद (छप्पन की पहाड़ियों के बीच यह मारवाड़ का लघु माउन्ट आबू है।) में शिवरात्रि के अवसर पर भरता है।
- **रानी भटियाणी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के जसोल क्षेत्र में कार्तिक वदी पंचमी को भरता है।
- **नाकोड़ाजी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर में पोष कृष्ण दशमी को भरता है।
- **बजरंग पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के सिणधरी क्षेत्र में मंगसर वदी तृतीया को भरता है।

बीकानेर जिले के मेले

- **निर्जला ग्यारस मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के लक्ष्मीनाथ मंदिर में ज्येष्ठ सुदी एकादशी को भरता है।
- **जम्भेश्वर मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के मुकाम-तालवा (नोखा) में वर्ष में दो बार - फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है।
- **नागणेची माता का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले में नवरात्रा के अवसर पर भरता है।
- **चनणी चेरी मेला (सेवकों का मेला)** - यह मेला बीकानेर जिले के देशनोक में फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- **कपिल मुनि का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के श्री कोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **करणी माता का मेला** - यह मेला देशनोक (बीकानेर) में नवरात्रा (कार्तिक एवं चैत्र माह में) में भरता है।

बांसवाड़ा जिले के प्रमुख मेले

- **घोटिया अम्बा मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घोटिया (बारीगामा) नामक स्थान पर चैत्र अमावस्या को (जिले का सबसे बड़ा ग्रामीण मेला) भरता है।
- **कल्लाजी का मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के गोपीनाथ का गढ़ा नामक स्थान पर आश्विन सुदी नवरात्रि प्रथम रविवार को भरता है।
- **अंदेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के अंदेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **गोपेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घाटोल के निकट कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **मानगढ़ धाम मेला (आदिवासियों का मेला)** - यह मेला बांसवाड़ा के आनंदपुरी के निकट मानगढ़ धाम में मार्गशीर्ष पूर्णिमा को भरता है।

चूरू जिले के मेले

- **भभूता सिद्ध का मेला** - यह मेला चूरू जिले के चंगोई (तारानगर) में भादवा सुदी सप्तमी को भरता है।

- ***गोगा जी का मेला*** - यह मेला चूरू जिले के ददरेवा गांव में भाद्रपद कृष्णा नवमी (गोगानवमी) को भरता है।
- ***सालासर बालाजी का मेला*** - यह मेला चूरू जिले के सालासर (सुजानगढ़) में चैत्र व कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

बारां जिले के मेले

- ***सीताबाड़ी का मेला (धार्मिक व पशु मेला)*** - यह मेला बारां जिले के सीताबाड़ी, केलवाड़ा (सहरिया जनजाति का कुम्भ) नामक स्थान पर ज्येष्ठ अमावस्या (इस मेले में सहरियाओं का स्वयंवर होता है) को भरता है।
- ***डोल मेला*** - यह मेला बारां जिले के डोल तालाब पर जलझूलनी एकादशी (भाद्रपद शुक्ला एकादशी) को भरता है। इसमें देवविमानों सहित शोभायात्रा निकलती है।
- ***ब्रह्माणी माता का मेला*** - यह मेला बारां जिले के सोरसन में भरता है। यहां पर गधों का मेला भी लगता है।
- ***फूलडोल शोभा यात्रा महोत्सव (श्रीजी का मेला)*** - यह मेला बारां जिले के किशनगंज में होली (फाल्गुन मास की पूर्णिमा) के दिन भरता है।
- ***कपिल धारा का मेला*** - यह मेला सहरिया क्षेत्र (बारां) में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

भरतपुर के मेले

- ***गंगा दशहरा मेला*** - यह मेला भरतपुर जिले के कामां क्षेत्र में ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी से द्वारदशी तक भरता है।
- ***बसंती पशु मेला*** – यह मेला माघ अमावस्या से शुक्ल पंचमी तक भरता है ।
- ***गरुड़ मेला*** - यह मेला भरतपुर जिले के बंशी पहाड़पुर में कार्तिक शुक्ल तृतीया को भरता है।
- ***भोजन बारी/भोजन थाली परिक्रमा*** – भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को कामा में भरता है ।
- ***जसवंत पशु मेला*** - यह मेला भरतपुर जिले में अश्विन शुक्ल पंचमी से पूर्णिमा तक भरता है।
- ***बृज महोत्सव*** – यह मेला द्वादशी से माघ शुक्ल – डीग भरतपुर में भरता है ।

जयपुर के मेले

- ***गणगौर मेला*** - गणगौर मेला जयपुर में चैत्र शुक्ला तीज व चौथ को भरता है।
- ***बाणगंगा मेला*** - यह विराटनगर, जयपुर में वैशाख पूर्णिमा को भरता है।
- ***शीतलामाता का मेला*** - यह मेला चाकसू, जयपुर में चैत्र कृष्ण अष्टमी को भरता है।
- ***गधों का मेला*** - आश्विन कृष्ण सप्तमी से आश्विन कृष्ण एकदशी तक लुनियावास (सांगानेर) गांव में भरता है।
- ***तीज की सवारी एवं मेला*** - यह जयपुर में श्रावण शुक्ला तृतीया को आयोजित होता है।

भीलवाड़ा के मेले

- ***सवाई भोज का मेला*** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के आसींद में सवाई भोज स्थान पर भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को भरता है।
- ***फूलडोल का मेला (रामस्नेही सम्प्रदाय)*** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के रामनिवास धाम (रामद्वारा) में चैत्र कृष्णा प्रतिपदा से पंचमी तक भरता है।
- ***तिलस्वां महादेव मेला*** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के तिलस्वां (मांडलगढ़) में शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के अवसर पर भरता है।
- ***सौंरत (त्रिवेणी) का मेला*** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के त्रिवेणी संगम सौंरत(मेनाल, मांडलगढ़) में शिवरात्रि के पर्व पर आयोजित होता है।
- ***धनोप माता का मेला*** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के धनोप गांव (खारी व मानसी नदी के बीच स्थित) में चैत्र शुक्ल एकम से दशमी तक भरता है।

जोधपुर के मेले

- ***नाग पंचमी का मेला*** - यह मेला मंडोर (जोधपुर) में भाद्रपद शुक्ल पंचमी को भरता है।
- ***धींगागवर बेतमार मेला*** - यह मेला जोधपुर में वैशाख कृष्ण तृतीया को भरता है।
- ***खेजड़ी वृक्ष मेला*** - यह मेला जोधपुर के खेजड़ली में भादवा शुक्ला दशमी को आयोजित होता है।
- ***पाबूजी का मेला*** - कोलू गांव (फलोदी, जोधपुर) में चैत्र अमावस्या को भरता है।
- ***वीरपुरी का मेला*** - यह मेला मंडोर (जोधपुर) में श्रावण मास के अंतिम सोमवार को भरता है।
- ***बाबा रामदेव जी का मेला*** - बाबा रामदेव जी का यह मेला मसूरिया (जोधपुर) में भादवा सुदी दूज को भरता है।
- ***चामुंडा माता का मेला*** - इनके मंदिर में आश्विन शुक्ल नवमी को जोधपुर दुर्ग में एक प्रसिद्ध मेला लगता है।

सिरोही के मेले

- ***सारणेश्वर जी का मेला*** - यह मेला सिरोही में भादवा सुदी ।। एवं ।2 को भरता है।

- भारत की पहली ओरण पंचायत - ढोक गाँव (चौहटन, बाड़मेर) है, जहाँ पर वीरात्रा माता का मंदिर है।

➢ **वीर फत्ताजी**
- जन्म – साथूँ गाँव (जालौर)।
- गाँव पर लूटेरों के आक्रमण के समय इन्होंने भीषण युद्ध किया।
- इनकी याद में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला नवमी को मेला भरता है।

➢ **बाबा झूंझारजी**
- जन्म – इमलोहा गाँव (सीकर)।
- भगवान राम के जन्म दिवस रामनवमी को स्यालोदड़ा (सीकर) में इनका मेला भरता है।
- बाबा झूंझारजी का स्थान सामान्यतः खेजड़ी के पेड़ के नीचे होता है।

➢ **वीर बिग्गाजी**
- जन्म – जांगल प्रदेश । रीडीगाँव (बीकानेर)
- पिता - राव मोहन, माता - सुल्तानी देवी।
- बीकानेर के जाखड़ समाज के कुल देवता।
- मुस्लिम लूटेरों से गायों की रक्षा की।

➢ **डूंगजी-जवाहरजी (गरीबों के देवता, राजस्थान के रोबिन हुड)**
- सीकर (पाटोदा) जिले के लूटेरे लोकदेवता, जो धनवानों व अंग्रेजों से धन लूटकर गरीबों में बांट देते थे।
- 1857 की क्रांति में सक्रिय भाग लिया।
- नसीराबाद छावनी को लुटा

➢ **हरिराम बाबा**
- ये सर्प दंश का इलाज करते थे।
- सुजानगढ़ नागौर मार्ग पर झोरड़ा गाँव (नागौर) में इनका पूजा स्थल है।
- गुरु - भूरा
- पिता – रामनारायण
- माता – चन्दनी देवी
- साँप के बाम्बी की पूजा होती है ।

➢ **पनराजजी**
- जन्म – नगा गाँव (जैसलमेर)।
- मुस्लिम लूटेरों से काठोड़ी गाँव के ब्राह्मणों की गायों को छुड़ाते हुए शहीद हुए।
- इनकी स्मृति में पनराजसर गाँव (जैसलमेर) में वर्ष में दो बार मेला भरता है।

➢ **केसरिया कुँवरजी**
- गोगाजी के पुत्र जो लोकदेवता के रूप में पूजे जाते है।
- इनके थान पर सफेद रंग की ध्वजा फहराते हैं।

➢ **भोमियाजी**
- गाँव-गाँव में भूमि रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते है ।

अध्याय – 13

महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल

राज्य में पर्यटन

राजस्थान पर्यटन नीति 2020

- **लागू 9 सितंबर 2020**
- यह अंकित 5 वर्ष या नई नीति आने तक लागू रहेगी।

उद्देश्य
- राजस्थान को अग्रणी पर्यटन ब्रांड के रूप में बढ़ावा देना।
- सड़क, रेल और हवाई मार्ग के माध्यम से पर्यटन स्थलों की कनेक्टिविटी में सुधार करना।
- पर्यटकों के लिए आवासीय बुनियादी ढांचे का विस्तार करना।
- पर्यटकों (विशेषकर महिला) के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान करना
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना तथा नये पर्यटन स्थलों उत्पादों एवं सेवाओं को बढ़ावा देना।
- स्वरोजगार पैदा करने के लिए पर्यटन विशिष्ट कौशल विकास की सुविधा प्रदान करना।
- निजी क्षेत्र के निवेश को प्रोत्साहित करना।
- पर्यटन इकाइयों की स्थापना के लिए अनुमोदन (Approval) प्रदान करने के लिए प्रशासनिक ढांचे को सशक्त बनाना।
- बेहतर नीति निर्माण और पूर्वानुमान के लिए बाजार अनुसंधान (Market research) को बढ़ावा देना।

राजस्थान पर्यटन के विभिन्न आयाम:
- राजस्थान में सबके लिए कुछ ना कुछ है। (Something for everyone)

ऐतिहासिक स्मारक:

Special heritage/craft village:

गाँव / गाँव के समूह की पहचान की जाएगी एवं उन्हें स्पेशल हेरिटेज विलेज अथवा स्पेशल क्राफ्ट विलेज का दर्जा दिया जाएगा। इसकी जिम्मेदारी जिला पर्यटन विकास समिति को दी गई है।

मरुस्थलीय पर्यटन:

हॉर्स सफारी, कैमल सफारी, डेजर्ट कैंप, रेत के धोरों, शूटिंग के लिए आकर्षक स्थलों पर फोकस किया जा रहा है।

- **एडवेंचर टूरिज्म:**

राजस्थान में एडवेंचर टूरिज्म की भी पर्याप्त संभावनाएं है।

जैसे Aero tourism, aqua tourism, land based tourism.

- बॉर्डर टूरिज्म
- ग्रामीण पर्यटन

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/gd17e6

Online order - https://bit.ly/agri-notes

Call करें - 9887809083

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE